विषय सूची

सत्र-1 भाग (5) मंगलवार, 28 जुलाई, 2015/06 श्रावण, 1937 (शक) अंक-13

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ सं.
1.	सदन में उपस्थित सदस्यों की सूची	1-2
2.	निधन सम्बन्धी उल्लेख एवं शोक संवेदना	3-12

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्र-1 भाग (5) मंगलवार, 28 जुलाई, 2015/06 श्रावण, 1937 (शक) अंक-13

दिल्ली विधान सभा

सदन अपराह्न 2.00 बजे आरम्भ हुआ।
माननीय अध्यक्ष महोदय (श्री राम निवास गोयल) पीठासीन हुए।

निम्नलिखित सदस्य सदन में उपस्थित हुए:

1. श्री संजीव झा
2. श्री पंकज पुष्कर
3. श्री अजेश यादव
4. श्री वेद प्रकाश
5. श्री ऋतुराज गोविन्द
6. श्री रघुविन्दर शौकीन
7. श्री विजेन्द्र गुप्ता
8. श्री राजेश गुप्ता
9. श्री अखिलेश पति त्रिपाठी
10. श्री सोमदत्त
11. श्री विशेष रवि
12. श्री हजारी लाल चौहान
13. श्री शिव चरण गोयल
14. श्री गिरीश सोनी
15. श्री जरनैल सिंह (रा.गा)
16. श्री जगदीप सिंह
17. श्री जरनैल सिंह (ति.न)
18. श्री राजेश ऋषि
19. श्री महेन्द्र यादव
20. श्री नरेश बाल्यान

21. श्री आदर्श शास्त्री
22. श्री गुलाब सिंह
23. कर्नल देवेन्द्र सहरावत
24. सुश्री भावना गौड़
25. श्री सुरेन्द्र सिंह
26. श्री विजेन्द्र गर्ग
27. श्री मदन लाल
28. श्रीमती प्रमिला टोकस
29. श्री नरेश यादव
30. श्री करतार सिंह तंवर
31. श्री प्रकाश
32. श्री अजय दत्त
33. श्री दिनेश मोहनिया
34. सरदार अवतार सिंह कालका जी
35. श्री सही राम
36. श्री नारायण दत्त शर्मा
37. श्री अमानतुल्लाह खान
38. श्री मनोज कुमार
39. श्री नितिन त्यागी
40. श्री ओम प्रकाश शर्मा
41. श्री एस.के. बग्गा
42. श्री अनिल कुमार बाजपेयी
43. श्री राजेन्द्र पाल गौतम
44. सुश्री सरिता सिंह
45. श्री हाजी इशराक
46. श्री श्रीदत्त शर्मा
47. चौ. फतेह सिंह
48. श्री जगदीश प्रधान

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्र-1 भाग (5) मंगलवार, 28 जुलाई, 2015/06 श्रावण, 1937 (शक) अंक-13

सदन अपराह्न 2.00 बजे आरम्भ हुआ।

माननीय अध्यक्ष महोदय (श्री राम निवास गोयल) पीठासीन हुए।

(राष्ट्रीय गीत - वन्दे मातरम)

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के प्रति शोक संवेदना

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यगणों, जैसा कि आप सबको विदित है भारत के पूर्व राष्ट्रपति भारत रत्न डॉ. ऐपीजे अब्दुल कलाम हमारे बीच में नहीं रहे। उनके लिए हम शोक संवेदना रखेंगे। यह अत्यधिक शोक का विषय है कि कल देश के पूर्व राष्ट्रपति भारत रत्न डॉ. ऐपीजे अब्दुल कलाम का शिलांग में हृदय गति रुक जाने से निधन हो गया। डॉ. कलाम का जन्म 15 अक्तूबर, 1931 को गांव धनुषकोटी जिला रामेश्वरम राज्य तमिलनाडू में एक साधारण परिवार में हुआ था। उनका जीवन अत्यन्त संघर्षपूर्ण रहा तथा विपरीत परिस्थितियों में संघर्ष करते हुए वर्ष 1958 में उन्होंने मद्रास इस्टीट्यूट ऑफ टैक्नोलोजी से विज्ञान स्नातक की उपाधि प्राप्त की तत्पश्चात वर्ष 1962 में भारतीय रक्षा अनुसंधान एवं विकास संस्थान में कार्य करते हुए अनेक उपग्रह प्रशिक्षण परिप्रेक्षण परियोजनाओं में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। मिसाइल क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के कारण उन्हें मिसाइलमैन के नाम से जाना जाता है। देश के 11वें राष्ट्रपति के रूप में उन्होंने वर्ष 2002 से 2007 तक इस पद को सुशोभित किया।

डॉ. कलाम बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे और वैज्ञानिक होने के साथ-साथ लेखक, शिक्षक तथा वीणावादक भी थे, अपने सादगीपूर्ण जीवन में उन्होंने सदैव अनुशासन, संयम तथा सहनशीलता का पालन किया। युवा पीढ़ी के लिए वे सदैव प्रेरणा स्रोत थे, देश के छात्र छात्राओं में अत्यधिक लोकप्रिय थे। राष्ट्रपति पद पर अपना कार्यकाल समाप्त होने के बाद भी वे सामाजिक जीवन में सदैव सक्रिय रहे तथा देश के विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में व्याख्यान देते रहे। ऐसे विलक्षण एवं प्रतिभावान व्यक्ति के निधन से राष्ट्र को अत्यधिक क्षति हुई है। शोक में डूबा सारा देश आज उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा है। सभी देशवासियों के साथ स्वयं को जोड़ते हुए यह सदन भी डॉ. कलाम को श्रद्धा सुमन अर्पित करता है और परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि उन्हें अपने चरणों में स्थान दे ओम शान्ति शान्ति। इसी कड़ी में नेता प्रतिपक्ष।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अध्यक्ष महोदय, भारत रत्न डॉ. अवुल पकिर जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम साहब जो 11वें राष्ट्रपति के रूप में 5 वर्ष तक भारत का नेतृत्व उन्होंने किया और लगभग 84 वर्ष की आयु में अकस्मात एक ऐसी खबर आयी जिसके बारे में कभी किसी भारतवासी ने शायद सोचा भी नहीं होगा कि आज ऐसी दुर्घटना इस देश में होने वाली है। सबसे बड़ी बात यह है कि उन्होंने हमेशा कहा कि एक शिक्षक के रूप में ही मुझे याद किया जाए यानि की एक शिक्षक जो इस देश के प्रति अपने आपको सही रूप में जवाबदेह बनाकर चले गए और अंतिम सांस तक एक सक्रिय भूमिका देश के प्रति वो निभाते रहे। अंतिम पंक्ति जो उन्होंने अध्यक्ष जी उनके मुंह से निकली और जिसके बाद वो मूर्छित हो गए। वो थी धरती को जीने लायक कैसे बनाया जाए एक अंतिम पंक्ति में इतना बड़ा प्रश्न देश के सामने दुनिया के सामने खड़ा कर गए है और मैं समझता हूं 21वीं सदी में सबसे बड़ा प्रश्न अगर कोई है तो डॉ. अब्दुल कलाम द्वारा कही गयी, उनके अंतिम शब्दों में वो पूरी तरह से समाहित है। ज्ञान ही सफलता का आधार है और मुझे लगता है कि उन्होंने कहा कि 'लक' कुछ

नहीं होता, कहा जाता है कि बाई चांस हो गया या किस्मत से हो गया। उन्होंने अपने जीवन में हमेशा कहा कि 'लक' कुछ नहीं होता ज्ञान से ही सफलता मिलती है और वास्तविकता ये है कि 'लक' से नहीं मेहनत से ही सब कुछ होता है। युवाओं के लिए प्रेरणा के स्रोत थे। मुझे याद है पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने जब अब्दुल कलाम साहब के पास ये संदेश भेजा अब्दुल कलाम साहब पूरी जिंदगी एक नॉन पॉलिटिकल एंटिटी थे। कभी उन्होंने किसी राजनीतिक दल से अपने आपको नहीं जोड़ा लेकिन जब पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने उनके पास संदेश भेजा कि हम आपको देश का राष्ट्रपति देखना चाहते हैं तो प्रधानमंत्री जी के मन में प्रश्न था कि कलाम साहब इस बात को एक्सेप्ट करेंगे कि नहीं करेंगे। और जब एनडीए के शासनकाल में श्री अब्दुल कलाम साहब को राष्ट्रपति के रूप में स्थापित किया गया तो पूरे देश में सरकार के उस कदम की भूरि भूरि प्रशंसा की और शायद अटल बिहारी वाजपेयी जी का वो कदम पूरे देश के लिए सही साबित हुआ। आज के इस अवसर पर मैं अपनी और अपनी पार्टी की ओर अपने साथियों की ओर से श्रद्धांजलि के ये शब्द सदन के समक्ष अर्पित करते हुए अपनी बात को यही समाप्त करता हूं।

अध्यक्ष महोदय : माननीय उप मुख्यमंत्री जी।

श्री मनीष सिसौदिया : अध्यक्ष महोदय, ये आज का दिन पूरे देश के लिए और इन-फैक्ट पूरी दुनिया में वैज्ञानिक सोच के लिए एक बहुत सदमे का दिन है क्योंकि हम सब जानते हैं विजेन्द्र भाई भी अभी बता रहे थे कि और आपके संज्ञान, आपके शब्दों में भी था कि किस तरह से एक गरीब नाविक परिवार में जन्म लेकर एक तरफ गीता का अध्ययन, दूसरी तरफ कुरान का अध्ययन और साथ-साथ फिजिक्स का अध्ययन पूरी की पूरी जिंदगी को वैज्ञानिक सोच देने वाले व्यक्तित्व के रूप में जिस तरह से आदरणीय कलाम साहब उभरे और वे सही मायने में नेता थे। वे देश का नेतृत्व

कर रहे थे, वे युवा पीढ़ी का नेतृत्व कर रहे थे, छात्रों का नेतृत्व कर रहे थे, राजनेताओं का नेतृत्व कर रहे थे तो उनके नेतृत्व में बहुत सारे लोग काम करने के लिए लालायित थे। मुझे भी थोड़ा सा सौभाग्य मिला। शिक्षा मंत्री होने के नाते मैं उनसे मिलने गया था अभी कुछ दिन पहले उनके घर पर। उसके पहले भी कई बार बतौर पत्रकार आंदोलनकारी रूप में मुलाकात हुई थी। राष्ट्रपति भवन में भी उनसे बातचीत हुई थी। आदरणीय अन्ना हजारे जी के साथ भी उनसे मिलना हुआ राष्ट्रपति भवन में, लेकिन पिछली बार अभी जब शिक्षा मंत्री बनने के बाद मैं उनका आशीर्वाद लेने, उनसे मार्गदर्शन लेने उनके घर गया तो बहुत खुश थे, बहुत प्रसन्न होकर उन्होंने कहा कि, उन्हें शायद सूचना थी कि शिक्षा पर दिल्ली में कुछ काम करने का प्रयास हो रहा है कुछ अलग हटकर कुछ बेहतर प्रयास, बहुत कातर स्वर में उन्होंने कहा था मैं पूरी जिंदगी लोगों को कहता रहा हूं कि स्लेबस कम करो, स्लेबस कम करो। सारे लोग बढ़ाते जा रहे हैं और उन्होंने एक तरह से मार्गदर्शन देते हुए कहा कि अगर हम बच्चों का स्लेबस नवीं, दसवीं, ग्यारवीं, बारहवीं के बच्चों का स्लेबस कम कर सकें तो बहुत अच्छा होगा। मैंने उनसे और थोड़ी सी बातचीत की कि कितना, आपका तो पूरा अध्ययन है इसपर, आपका पूरा काम है मार्गदर्शन करें, आज्ञा दें। तो उन्होंने बताया कि अगर हम वैसे तो 50 परसेंट कम करने की जरूरत है पर अगर नवीं, दसवीं, ग्यारहवीं, बारहवीं में बच्चों के कंधे से 25-25 परसेंट बोझ भी उठा दें, कम कर दें तो पूरा चार साल में बच्चों का एक साल बचता है और उस एक साल में उन बच्चों को जिंदगी के जीने के लिए और तरीके सिखाइये। स्पोर्टस सिखाइये, थियेटर सिखाइये, आर्ट सिखाइये, स्किल सिखाइये और अंत में उन्होंने कहा कि मेरा सपना है कि बच्चे जब क्लास रूम में निकले, बारहवीं क्लास पास करके निकलें तो हाथ में दो सर्टिफिकेट लेकर निकलें, एक स्किल का और एक अपनी शिक्षा का। तो मैंने, बहुत भावुक क्षण था वो, मैंने उनसे कहा कि मैं कोशिश करता हूं। मैं कोई बहुत एम्पावरड नहीं हूं लेकिन दिल्ली की जनता ने हमें अपना साथ दिया है, दिल्ली की जनता ने हमारे हाथ में अपनी

ताकत दी है, हम कोशिश करेंगे कि इस सपने को सच करके दिखा सकें और आपके जीते जी दिखा सकें। उसके बाद ये सदन भी इस बात का गवाह है कि हमने शिक्षा में वह प्रयोग करने की कोशिश की और यहां सदन में उन्हीं की रेफरेंस से मैंने वह स्पीच में मैंने वह अपनी बजट की स्पीच में भी उनकी बात शामिल की थी। सपनों के बारे में उन्होंने हमेशा कहा और सबसे प्रचलित उनकी सबसे लोकप्रिय उनका वक्तव्य है कि सपने वे नहीं होते जब हम जिन्हें हम सोकर देखते हैं, बल्कि सपने वे होते हैं जिनके देखने के बाद हम अपनी नींद भूल जाते हैं, जो हमारी नींद उड़ा देते हैं। उन्होंने ऐसा ही एक सपना हमारी आंखों में भी डाला स्किल एजूकेशन का, इन बच्चों के ऊपर जो पुस्तकों का, पाठयक्रम का, बस्तों का बोझ है उसको कम करने का, उस सपने को हम दिन-रात जाग के सच करें। मेहनत करके सच करें। सारे लोग मिलकर, तमाम पार्टी, तमाम उससे ऊपर उठके सच करें। उनको इससे बढ़िया श्रद्धांजलि मुझे नहीं लगता कि कुछ होगी और हम पूरी मेहनत से अपना काम करें और जहां तक कलाम साहब का सवाल है मुझे लगता है कि कलाम साहब जैसी शखसियत एक शरीर यात्रा जरूर पूरी करती है लेकिन आज भी वे देश के हर छात्र के अंदर, छोटे-छोटे बच्चों के अंदर कॉलेजज में बैठे हुए छात्रों के अंदर, प्रोफेसरस के अंदर, तमाम युवाओं के अंदर, नेताओं के अंदर, अफसरों के अंदर, प्रोफेशनलस के अंदर आज भी उतने ही एक्टिव और जिस गति से अकसर चला करते थे, मुझे याद है अभी पिछले दिनों 2 जुलाई को हमने उन्हें आमंत्रित किया था दिल्ली सचिवालय में शिक्षकों के साथ संवाद के लिए तो हम और अरविंद जी सामान्यत: तेज गति से ही चलते हैं लेकिन हमसे कहीं ज्यादा तेज गति से इस उम्र में वो लिफ्ट की तरफ बढ़े और हमें अपनी गति तेज करनी पड़ी तो मुझे लगता है कि इस उम्र में भी उतनी ऊर्जा का कुछ अंश हम लेकर उनके आशीर्वाद से चल सकें और उनके आशीर्वाद से उनके दिखाये रास्ते पर शिक्षा को लेकर जा सकें। शिक्षा के माध्यम से देश को लेकर जा सकें तो सही श्रद्धांजलि होगी। मैं दिल्ली के तमाम वाशिंदों की तरफ से, नागरिकों की तरफ से,

तमाम दिल्ली सरकार की तरफ से, इस सदन की तरफ से ऐसे महा व्यक्तित्व ऐसे महान व्यक्तित्व को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। बहुत-बहुत शुक्रिया।

अध्यक्ष महोदय : माननीय मुख्यमंत्री जी।

माननीय मुख्यमंत्री जी : माननीय अध्यक्ष महोदय, कल जब ये पता चला संदेश आया कि डॉ. अब्दुल कलाम जी का निधन हुआ तो बेहद अफसोस हुआ, बहुत ही दुख हुआ, व्यक्तिगत तौर पर भी और जैसा कि पूरे देश में इस संदेश को मिलने के बाद सारे देश में एक मातम का माहौल है उसी से ये जाहिर है कि कितने लोकप्रिय डॉ. अब्दुल कलाम साहब थे। वे एक आम आदमी के राष्ट्रपति थे उनका लोगों से दिल से दिल का रिश्ता था और हर क्षेत्र में वे मल्टी-फेस्टिट पर्सनलिटी जो कहते हैं हर क्षेत्र में उनका योगदान था। वे वैज्ञानिक थे, हमारे देश के मिसाइलमैन माने जाते हैं लेकिन अपने आप जैसा कि वे कहते थे कि शिक्षा का क्षेत्र मुझे सबसे प्रिय है और मुझे पढ़ाना सबसे अच्छा लगता है। अभी 2 जुलाई को ही, एक महीना भी नहीं हुआ, 2 जुलाई को दिल्ली सचिवालय में वे आये थे, मनीष जी लगातार उनके सम्पर्क में थे पिछले कुछ महीनों से, 2 जुलाई को जब वे आये तो दिल्ली सरकार 50 मॉडल स्कूल बनाने जा रही है जिसमें प्रिंसीपलस को, टीचरस को इंस्पायर किया जा रहा है। उनको सबको इंस्पायर करने के लिए आये थे। उनका भाषण सुनने के बाद वाकई टीचरस और प्रिंसीपलस के अंदर एक नया जोश पैदा हुआ था। उन्हें भी अच्छा लगा। जो एक्सपेरीमेंट दिल्ली सरकार कर रही है। दिल्ली सरकार ने जो शिक्षा के क्षेत्र में बजट को दोगुना किया उसकी भी उन्होंने काफी तारीफ की थी तो हमें हम तो बहुत खुश थे कि आने वाले समय में उनके साथ मिलकर हम शिक्षा के क्षेत्र में नई ऊंचाइयां हासिल करेंगे तो दिल्ली सरकार के लिए और हम सब लोगों के लिए उनका चले जाना हम लोगों के एक बहुत बड़ा वेक्यूम पैदा करता है और मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को शांति मिले और मैं दिल्ली सरकार की तरफ से एक छोटा

सा उनके सम्मान के रूप में कहना चाहता हूँ कि क्योंकि शिक्षा कस क्षेत्र उनके लिए सबसे उनके करीब था तो जो सरकार 10 लाख रूपये का लोन बच्चों को उच्च शिक्षा के लिए देने जा रही है उस स्कीम का नाम ''डॉ. अब्दुल कलाम'' के नाम से रखा जायेगा। ये एक छोटा सा सम्मान दिल्ली सरकार की तरफ से मैं घोषणा करना चाहता हूँ।

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यगणों, जैसाकि आपको विदित है कल के दिन ही 27 जुलाई, 2015 को पंजाब में गुरदासपुर जिले के दीना नगर में एक थाने पर आतंकवादियों ने अचानक हमला कर दिया। इस हमले में एस.पी. श्री बलजीत सिंह सहित चार पुलिसकर्मी शहीद हो गये तथा तीन नागरिक मारे गये और 15 लोग घायल हो गये। यह सदन इस आतंकी हमले की घोर निंदा करता है। देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए यह गंभीर चिंता का विषय है लेकिन सुरक्षा बलों ने जिस मुस्तैदी से कार्य किया तथा आतंकवादियों को ढेर कर दिया, यह भी गौरव की बात है। मैं अपनी ओर से तथा पूरे सदन की ओर से इस हमले में शहीद हुए पुलिस कर्मियों एवं हताहत हुए नागरिकों के प्रति शोक संवेदना व्यक्त करता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उनको अपने श्रीचरणों में स्थान दे तथा उनके परिवार वालों को इस दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

ओउम शांति, शांति।

अध्यक्ष महोदय : इस विषय पर नेता प्रतिपक्ष।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, पंजाब के गुरदासपुर नगर के दीनानगर में एक घटना जिस तरह से घटित हुई है और जिस बेरहमी से आतंकवादियों ने पाकिस्तान की सरहदों को पार करके हिन्दुस्तान में आकर ये दुष्कर्म किया है, मैं यही कहूँगा कि मेरे पास शब्द नहीं है कि मैं किन शब्दों में इसकी कड़ी आलोचना करूँ। क्योंकि मैं समझता हूँ, कि दूनिया में इंसानियत से बड़ा धर्म और मजहब कोई नहीं है और इन्होंने इंसानों

का नहीं इंसानियत का कत्ल किया है। किस बेरहमी के साथ वहां पर और कितने बड़े असले के साथ वो वहां आये और दीनानगर के एक थाने की इमारत में उन्होंने घटना को अंजाम देने के बाद पनाह ली और वहां से भी लगातार फायरिंग करते रहे। मुझे फख्र है, गर्व है अपने देश के सिपाहियों पर, फोर्स पर, कि जिन्होंने अपनी जान पर खेलकर उनको मालूम था कि सामने दरिंदे हैं उसके बावजूद जिस तरह से स्वर्गीय श्री बलजीत सिंह ने एक उच्च अधिकारी होने के बावजूद हिन्दुस्तान की इस सरजमी को दुनिया के सामने एक बार फिर से अपने खून से सींचकर अपनी बहादुरी का जो एक उदाहरण दिया है मैं उनको शत-शत नमन करता हूँ, प्रणाम करता हूँ और ये शहादत उनके पिता ने भी दी थी 1984 में और आज उसी शहादत पर एक बार फिर से जब तकलीफ सामने आई कुछ इस तरह के बादल मंडराये तो शहीद के पुत्र ने भी अपनी शहादत देकर ये सिद्ध कर दिया कि खून खौलता है और खौलता रहेगा। मैं यही कहूँगा कि जो 3 नागरिकों को भी वहाँ बिना किसी कारण के उनके परिवारों को अपने परिजनों से हाथ धोना पड़ा 4 पुलिसकर्मी भी जिन्होंने अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह करते हुए अपनी जान गंवा दी मैं अपनी ओर से अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और ऐसी घटनाओं की पुनरावर्ती न हो इसी उम्मीद के साथ अपनी बात को यहीं समाप्त करता हूं। ओम शांति शांति शांति।

अध्यक्ष महोदया : माननीय मुख्यमंत्री जी।

माननीय मुख्यमंत्री : आदरणीय अध्यक्ष महोदय, कल का दिन देश के लिए वाकई बहुत ही मातम का दिन था। एक तरफ हमारे प्रिय डॉक्टर अब्दुल कलाम का निधन हुआ तो दूसरी तरफ खबर मिली की पंजाब के अंदर आतंकवादियों ने एक बहुत बड़ा हमला किया है। उन आतंकवादियों का उद्देश्य था देश को कमजोर करने का उन आतंकवादियों का उद्देश्य था एक आतंक का माहौल फैलाने का, उसके पीछे जो भी ताकतें हैं, उन ताकतों को हम कहना चाहते हैं कि इस देश को आप कमजोर नहीं

कर सकते। पहले भी इस किस्म की कई कोशिशें हो चुकी हैं और ये देश दिन-ब-दिन साल-दर-साल प्रगति करता जा रहा है और एक के बाद एक मजबूत होगा। इन ताकतों के मन्सूबे कभी सफल नहीं हो सकते जिन पुलिसकर्मियों ने अपनी जान की बाजी लगाकर उनका सामना किया हम लोगों की रक्षा की, ये देश हमेशा के लिए उनका ऋणी रहेगा। पूरे सदन की तरफ से मैं उनको नमन करता हूँ उनको सलाम करता हूँ और मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि उनकी आत्माओं को शांति दे। उनके परिवार वालों को इस दुख की घड़ी को सहन करने की शक्ति दे। जो सिविलियन्स भी इस मौके पर मारे गये, मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि उनकी आत्माओं को भी शांति मिले और उनके परिवार वालों को ये दुख की घड़ी में दुख को बर्दाशत करने की शक्ति मिले। ओम शांति शांति शांति।

अध्यक्ष महोदय : शोक संवेदना प्रकट करने के लिए कई माननीय सदस्यों के नाम मेरे पास आए थे, उन्होंने आग्रह किया था लेकिन आज सदन एडजोर्न होने के बाद हम सब तुरन्त 10 राजाजी मार्ग पहुँचेंगे जहां पार्थिव शरीर माननीय पूर्व राष्ट्रपति जी का रखा गया है, और इसलिए मैं उनको समय नहीं दे पा रहा हूँ उनसे सबसे मैं क्षमा चाहता हूँ। सदन द्वारा पूर्व राष्ट्रपति डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम तथा पंजाब के गुरदासपुर में शहीद हुए लोगों के सम्मान में तथा उनकी आत्माओं की शांति के लिए हम सभी मौन धारण करेंगे, ... (सदन द्वारा थोड़ी देर मौन रखा गया)

अध्यक्ष महोदय : ओम शांति शांति शांति।

माननीय सदस्यगणों पूर्व राष्ट्रपति डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम जी के निधन पर राष्ट्रीय शोक के मद्देनजर यह निर्णय लिया गया है कि आज की कार्यवाही को स्थगित किया जाए। चूंकि कार्यसूची में निर्धारित विषय अभी लंबित हैं मगर सदन सहमत हो तो लंबित कार्य को सोमवार दिनांक 3 अगस्त 2015 को विचारार्थ लिया जा सकता हैं। मैं समझता हूँ सदन इस संबंध में सहमत है अत: नियम 280 के अन्तर्गत उठाये जाने वाले विशेष उल्लेखों के मामलों को भी आज नहीं लिया जाएगा। माननीय सदस्यों

से अनुरोध है कि वे सोमवार दिनांक 3 अगस्त, 2015 को पूर्वाह्न 11 बजे से पहले नियम 280 के अंतर्गत विशेष उल्लेख के लिए विधानसभा सचिवालय में पुनः सूचना दे दें। सदन की कार्यवाही स्थगित करने से पहले मैं पुनः सभी माननीय सदस्यों से आग्रह कर रहा हूं हम सब अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करने के लिए 10 राजाजी मार्ग जहां माननीय पूर्व राष्ट्रपति जी का पार्थिव शरीर रखा गया है, पहुँचेंगे।

अब सदन की कार्यवाही सोमवार दिनांक 3 अगस्त, 2015 को अपराह्न 2 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है, धन्यवाद।

सदन की कार्यवाही दिनांक 03.08.2015 अपराह्न 2.00 बजे तक के लिए स्थगित की गई।